One Week Training Programme on

Climate Change and Carbon Mitigation

for Scientists and Technologists Working in Government Sector

(21-25 October 2013)

राष्ट्रीय सहारा

22 अक्टूबर, 2013

जलवायु में 95 फीसद परिवर्तन मानव जनित

देहरादून (एसएनबी)। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद (आईसीएफआरई) में पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम सोमवार से शुरू हुआ। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के सहयोग से आयोजित जलवायु परिवर्तन व कार्बन न्यूनीकरण विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन परिषद के उप महानिदेशक (विस्तार) शैवल दासगुप्ता ने किया। इस अवसर पर उन्होंने वैश्विक स्तर पर पड़ रहे जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि मौजूदा समय में जलवायु परिवर्तन विश्व में सर्वाधिक चिंतनीय विषयों में से एक है। जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभाव को कम करने में वनों की महत्वपूर्ण भूमिका है। भारत विश्व में वन क्षेत्र के हिसाब से दसवां बड़ा देश है। राष्ट्रीय हरित मिशन देश में वन क्षेत्र में वृद्धि व कार्बन न्यूनीकरण की दिशा में उठाया गया सार्थक कदम है। सहायक महानिदेशक डा. टीपी सिंह ने जलवायु परिवर्तन के क्षेत्र में परिषद द्वारा किये जा रहे कार्यों पर प्रकाश डाला। संयुक्त राष्ट्र की जलवायु परिवर्तन पैनल की हालिया रिपोर्ट का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि 95 फीसद जलवायु परिवर्तन मानव जनित है। भारतीय उष्ण कटिबंधीय जलवायु विज्ञान संस्थान के विशेषज्ञ डा. अशोक कारूमुरी ने जलवायु परिवर्तन के पूर्वानुमान, आईसीएफआई के वैज्ञानिक डा. टीपी सिंह ने जलवायु परिवर्तन न्यूनीकरण के अनुकूल विधियां व भारतीय सुदूर संवेदी संस्थान के डा. एसपीएस कुशवाहा ने कार्बन मापन की विधियों पर व्याख्यान दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता उप महानिदेशक (अनुसंधान) जीएस गौराया व संचालन बीआरएस रावत ने किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में विभिन्न वैज्ञानिक संस्थानों व विश्वविद्यालयों के 27 प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं। डा. आरएस रावत, डा. अनीत श्रीवास्तव आदि भी इस अवसर पर उपस्थित रहे।

- आईसीएफआरई में पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू
- जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों व कार्बन न्यूनीकरण पर चर्चा

हिन्दुस्तान

22 अक्टूबर, 2013

जलवायु परिवर्तन रोकने में वनों की भूमिका अहम

देहरादून | वरिष्ठ संवाददाता

प्रशिक्षण

- भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद की ओर से पांच दिवसीय प्रशिक्षण शुरू
- 95 फीसदी जलवायु परिवर्तन मानव जनित: डॉ. टीपी सिंह

भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद के उप महानिदेशक (विस्तार) शैवल दास गुप्ता ने कहा कि जलवायु परिवर्तन रोकने में वनों की भूमिका अहम हो सकती है और भारत इसमें मुख्य रोल अदा कर सकता है।

दास गुप्ता ने सोमवार को भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद (आईसीएफआरई) द्वारा वैज्ञानिकों के लिए जलवायु परिवर्तन तथा कार्बन न्यूनीकरण पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए कहा कि जलवायु परिवर्तन इस समय विश्व की मुख्य चिंताओं में से एक है। परिषद के उप महानिदेशक (अनुसंधान) जीएस गौराया ने कहा कि वैज्ञानिक जलवायु परिवर्तन पर रोकने के लिए वनों की भूमिका के अध्ययन पर जुटे हैं। सहायक महानिदेशक डॉ. टीपी सिंह ने कहा कि आईसीएफआरई ने वन एवं जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हमेशा अग्रणी भूमिका निभायी है। कहा कि 95 फीसदी जलवायु परिवर्तन मानव जनित है। पहले सत्र में भारतीय ऊष्ण कटिबंधीय जलवायु विज्ञान संस्थान, पुणे के डॉ. अशोक कारुमुरी, डॉ. एसपीएस कुशवाहा, अपर निदेशक वीआरएस रावत, डॉ. अनीत श्रीवास्तव, डॉ. आरएस रावत और अन्य अधिकारी एवं वैज्ञानिक भी मौजूद थे।

दैनिक जागरण

22 अक्टूबर, 2013

हरित मिशन से होगा कार्बन न्यूनीकरण

देहरादून: भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद (आइसीएफआरई) की ओर से जलवायु परिवर्तन और कार्बन न्यूनीकरण पर सोमवार को पांच दिवसीय प्रशिक्षण शुरू किया गया। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में उप महानिदेशक (विस्तार) शैवल दास गुप्ता ने कहा कि जलवायु परिवर्तन विश्वभर की समस्या है। इसके दुष्प्रभाव रोकने में वनों की अहम भूमिका है। भारत विश्व में 10वां सबसे बड़ा वन क्षेत्र वाला देश है और देश में हरित मिशन के तह वन क्षेत्रों में इजाफा कर कार्बन न्यूनीकरण में अहम भूमिका निभाई जा सकती है। इस दौरान वैज्ञानिकों को कार्बन न्यूनीकरण के गुर सिखाए गए। कार्यक्रम की अध्यक्षता उप महानिदेशक जीएस गौराया ने की। इस अवसर पर डॉ. अशोक कारुमुरी, डॉ.टीपी सिंह, डॉ.एसपीएस कुशवाहा, वीआरएस रावत, डॉ.अनीत श्रीवास्तव आदि मौजूद थे।

उत्तराखण्ड केसरी

22 अक्टूबर, 2013

5 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आरम्भ

एफ.आर.आई. की बैठक का एक दृश्य। (मिश्र)

देहरादून, 21 अक्तूबर (मिश्र): भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून द्वारा वैज्ञानिकों के लिए जलवायु परिवर्तन तथा कार्बन न्यूनीकरण पर 5 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आरम्भ किया गया। उद्घाटन सत्र के मुख्यातिथि उप महानिदेशक (विस्तार) शैवल दासगुप्ता ने कहा कि जलवायु परिवर्तन इस समय विश्व की अति चिन्तनीय समस्याओं में से एक है। जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभाव को कम करने में वनों की महत्वपूर्ण भूमिका है। भारत विश्व में 10वां सबसे बड़े वनक्षेत्र वाला देश है। भारत सरकार का राष्ट्रीय हरित मिशन देश में वन क्षेत्रों में वृद्धि तथा कार्बन न्यूनीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

परिषद के उप महानिदेशक (अनुसंधान) जी.एस. गौराया ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभागी वैज्ञानिकों का स्वागत करते हुए सहायक महानिदेशक डा. टी.पी. सिंह ने कहा कि भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद ने वन एवं जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हमेशा अग्रणी भूमिका निभाई है। 21 से 25 अक्तूबर तक चलने वाला यह प्रशिक्षण कार्यक्रम भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा प्रायोजित है। कार्यक्रम में देश के विभिन्न केन्द्रीय तथा राज्य सरकार के वैज्ञानिक संस्थानों तथा विश्वविद्यालयों से 27 वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं। इस अवसर पर आई.सी.एफ.आर.ई. के वैज्ञानिक डा. अनीत श्रीवास्तव, डा. आर.एस. रावत व अन्य अधिकारी एवं वैज्ञानिक उपस्थित थे।

जनवाणी
22 अक्टूबर, 2013

जलवायु परिवर्तन वैश्विक समस्या

देहरादून : देश के वैज्ञानिकों के लिये जलवायु परिवर्तन व कार्बन न्यूनीकरण पर एफआरआई में पाचं दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आरंभ किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए मुख्य अतिथि आईसीएफआरई के उप महानिदेशक (विस्तार) शैवल दासगुप्ता ने कहा कि जलवायु परिवर्तन इस समय विश्व की चिन्तनीय समस्याओं में से एक है। जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभाव को कम करने में वनों की महत्वपूर्ण भूमिका है। पांच दिनों तक चलने वाले इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में देश भर के वैज्ञानिक संस्थानों व विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिक हिस्सा ले रहे हैं।

सोमवार को एफआरआई में 21 से 25 अक्टूबर तक चलने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रम देश के विभिन्न केन्द्रीय व राज्य सरकार के वैज्ञानिक संस्थानों एवं विश्वविद्यालयों से 27 वैज्ञानिक भाग ले रहें है। इस मौके पर आईसीएफआरई के उप महानिदेशक (विस्तार) शैवल दासगुप्ता ने कहा कि जलवायु परिवर्तन वैश्विक चिंता है। जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभाव को कम करने में वनों की महत्वपूर्ण भूमिका है।

एफआरआई में आयोजित जलवायु परिवर्तन विषय पर आयोजित कार्यशाला में जानकारी देते आईसीएफआरई के उपमहानिदेशक(विस्तार) शैवल दास गुप्ता। ■ छाया : जनवाणी

भारत विश्व में दसवां सबसे बड़ा वन क्षेत्र वाला देश है। भारत सरकार का राष्ट्रीय हरित मिशन देश में वन क्षेत्रों में वृद्धि तथा कार्बन न्यूनीकरण में महवपूर्ण भूमिका निभायेगा। आईसीएफआरई के सहायक महानिदेशक डा. टीपी सिंह ने कहा कि भारतीय वानिकि अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् ने वन एवं जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय स्तर पर हमेशा अग्रणी भूमिका निभायी है। हाल ही में स्टोक होम में सम्पन्न संयुक्तराष्ट्र जलवायु परिवर्तन पेनल की रिपोर्ट का हवाला देते हुये कहा कि 95 प्रतिशत जलवायु परिवर्तन मानव जनित है। कार्यक्रम के पहले सत्र में भारतीय उष्ण कटिबंधीय जलवायु विज्ञान संस्थान, पुणे के डॉ.अशोक कारूमुरी ने जलवायु परिवर्तन के पूर्वानुमानों पर तथा आईसीएफआरई के डा. टीपी सिंह ने जलवायु परिवर्तन न्यूनीकरण एवं अनुकूलन विधियों पर जानकारी दी। भारतीय सूदूर संवेदन संस्थान के डा.एसपीएस कुशवाहा ने कार्बन मापन की विधियों पर व्याख्यान दिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम की अध्यक्षता उपमहानिदेशक अनुसंधान जीएस गौराया ने की। इस मौके पर आईसीएफआरई के अपर निदेशक वीआरएस रावत वैज्ञानिक डा. अनीत श्रीवास्तव, डा. आरएस रावत व अन्य अधिकारी एवं वैज्ञानिक मौजूद रहे।

THE PIONEER

22 OCTOBER, 2013

'Scientists have key role in climate change mitigation'

Dehradun: Scientists have a greater role to play in climate change mitigation in the changing world, said the Indian Council of Forestry Research and Education deputy director general (Extension) Saibal Dasgupta at the inauguration of a five-day training course for scientists working in Government sector on climate change and carbon mitigation. Dasgupta said that India is likely to be effected very adversely by impact of climate change as food and water security of the country is also likely to be affected adversely. Climate change mitigation can be easily attained by planting trees, however, adaptation is going to be the key for stability of natural resources. He urged all scientists across the sectors to join hands to ensure climate change adaptation in various agroclimatic zones of the country. India is the tenth largest forested country in the world. Forests in India contributing a lot towards climate change mitigation. About six billion tonnes of carbon is sequestered in Indian forests. The ICFRE DDG (Research) Dr GS Goraya chaired the inaugural session while the course coordinator Dr TP Singh also addressed the gathering on the occasion. Dr Singh said that in recent years climate change had become an issue that had received tremendous global attention. He said climate change is a major challenge for developing countries like India. In the first technical session Dr Ashok Karumuri from Indian Institute of Tropical Meteorology (IITM) Pune delivered a lecture on climate change modeling while Dr SPS Kushwaha of Indian Institute of Remote Sensing spoke on carbon flux measurement. ***PNS***

HIMACHAL TIMES

22 OCTOBER, 2013

Scientists have greater role in climate change mitigation: Dr Dasgupta

DEHRADUN, OCT 21 (HTNS)

Scientists have greater role to play in climate change mitigation in the changing world, said Saibal Dasgupta, Deputy Director (Extension) Indian Council of Forestry Research and Education (ICFRE). People in developing countries are particularly vulnerable to climate change because they are more prone to the adverse impacts from climate change.

India is likely to be affected very adversely by impact of climate change as food and water security of the country is to be affected adversely. Climate change mitigation can be easily attained by planting trees, however, adaptation is going to be the key for stability of natural resources, said Dr Dasgupta.

He urged the scientists to join hands to ensure climate change adaptation in various agro-climatic zones of the country. India is the tenth largest forested country in the world. Forests in India are contributing a lot towards climate change mitigation.

About 6 billion tonnes of carbon is sequestered in our forests. Government of India's Green Indian mission plans to reforest 10 million hectare of degraded land in next 10 years, said Dr Dasgupta, on the occasion of the inaugural session of a 5 day training course for scientists working in government sector on climate change, and carbon mitigation.

Dr G S Goraya, DDG (Research) ICFRE chaired the inaugural session and Dr T P Singh, course coordinator also spoke on the occasion. Dr Singh said that in the recent years climate change is one of the few issues that have received tremendous global attention. He said climate change is a major challenge for developing countries like India. In the first technical session, Dr Ashok Karumuri from Indian Institute of Tropical Meteorology (IITM) Pune delivered a lecture on Climate Change modeling, Dr SPS Kushwaha of IIRS spoke on Carbon Flux measurement. The I C F R E is organizing a five-day training course for the scientists and technologists working in government sector on Climate Change and Carbon Mitigation from Oct 21 to 25. About 27 scientists from different scientific organizations of the country are participating in the training programme.

Department of Science and Technology (DST), Government of India is sponsoring the training programme under the 'National Programme for Training of Scientists and Technologists' working in government sector.

GARHWAL POST

22 OCTOBER, 2013

Scientists have greater role to play in Climate Change Mitigation: Dr Dasgupta

By OUR STAFF REPORTER

DEHRADUN, 21 Oct: Scientists have a greater role to play in climate change mitigation in the changing world, said Dr Saibal Dasgupta, Deputy Director (Extension), Indian Council of Forestry Research and Education (ICFRE), here, today. People in developing countries were particularly vulnerable to climate change. India was likely to be effected very adversely by impact of climate change as food and water security of the country was also likely to be affected. Climate change mitigation could be easily attained by planting trees, however, adaptation was going to be the key for stability of natural resources. He urged all scientists across the sectors to join hands to ensure climate change adaptation in various agro-climatic zones of the country.

India is the tenth largest forested country in the world. Forests in India contribute a lot towards climate change mitigation. About 6 billion tonnes of carbon is sequestered in its forests. Government of India's Green India Mission plans to reforest 10 million hectare of degraded land in the next 10 years, said Dasgupta, DDG (Extension) ICFRE on the occasion of the inaugural session of a 5 day training course for scientists working in government sector on climate change and carbon mitigation.

Dr GS Goraya, DDG (Research), ICFRE chaired the inaugural session and Dr TP Singh, course coordinator also spoke on the occasion. Dr Singh said that in the recent years Climate Change was one of the few issues that had received tremendous global attention. He said climate change was a major challenge for developing countries like India.

In the first technical session, Dr Ashok Karumuri from Indian Institute of Tropical Meteorology (IITM), Pune delivered a lecture of Climate Change modeling, Dr SPS Kushwaha of IIRS spoke on Carbon Flux measurement.

ICFRE is organising a five day training course for the scientists and technologists working in the government sector on Climate Change and Carbon Mitigation from 21 to 25 October. About 27 scientists from various scientific organisations of the country are participating in the training programme. The training programme is sponsored by the Department of Science and Technology (DST), Government of India under the 'National Programme for Training of Scientists and Technologists working in Government Sector'.